

kamalA stotram

——
कमलास्तोत्रम्

——
Document Information



Text title : kamalA stotram

File name : kamalaa.itx

Category : devii, dashamahAvidyA, stotra, devI

Location : doc_devii

Author : Traditional

Transliterated by : From webdunia.com

Proofread by : T N Ramakrishnan trnk64 at gmail.com

Description-comments : Vishnun Puran

Latest update : November 7, 2008

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

November 22, 2022

sanskritdocuments.org



कमलास्तोत्रम्



संकलक डो। मनस्वी श्रीविद्यालंकार 'मनस्वी'
विषगु पुराण में कमला स्तोत्र का उल्लेख प्राप्त होता है ।
सुभ-समृद्धि की प्राप्ति हेतु भगवती कमला का पाठ हलदायी है ।
यहां डमने सुविधा के लिअे कमला स्तोत्र को डिन्दी में अनुवाद सलित
उपलब्ध कराया है ।

ओंकाररुपिणी देवि विशुद्धसत्वरुपिणी ।
देवानां जननी त्वं छि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी लक्ष्मी! आप ओंकारस्वरुपिणी हैं, आप विशुद्धसत्त्व गुणरुपिणी
और देवताओं की माता हैंम् । हे सुंदरी! आप डम पर प्रसन्न डोम् ।

तन्मात्रैव भूतानि तव वक्षस्थलं स्मृतम् ।
त्वमेव वेदगम्या तु प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे सुंदरी! पंचभूत और पंचतन्मात्रा आपके वक्षस्थल हैं,
केवल वेद द्वारा ही आपकी जना जाता है । आप मुझ पर कृपा करें ।

देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसकिन्नरः ।
स्तूयसे त्वं सदा लक्ष्मि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी लक्ष्मी! देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस्
और किन्नर सभी आपकी स्तुति करते हैंम् । आप डम पर प्रसन्न डोम् ।

लोकतीता द्वैतातीता समस्तभूतवेष्टिता ।
विद्वज्जनकीर्तिता य प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे जननी! आप लोक और द्वैत से परे और सम्पूर्ण भूतगणों से
घिरी डुई रहती हैं । विद्वान लोग सदा आपका गुण-कीर्तन करते हैं ।
हे सुंदरी! आप मुझ पर प्रसन्न डोम् ।

परिपूर्णा सदा लक्ष्मी त्रात्री तु शरणाधिषु ।
विश्वाद्या विश्वकर्त्री य प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी लक्ष्मी! आप नित्यपूर्णा शरणागतों का उद्धार करने वाली,
विश्व की आदि और रचना करने वाली हैं । हे सुन्दरी! आप मुझ पर
प्रसन्न होम् ।

ब्रह्मरूपा य सावित्री त्वदीया भासते जगत् ।
विश्वरूपा वरेण्या य प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे माता! आप ब्रह्मरूपिणी, सावित्री हैं । आपकी दीप्ति से ही निजगत
प्रकाशित होता है, आप विश्वरूपा और वर्णन करने योग्य हैं ।
हे सुन्दरी! आप मुझ पर कृपा करें ।

क्षित्यभेजोमद्भयोमपंचभूतस्वरूपिणी ।
बन्धादेः काराणं त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे जननी! क्षिति, जल, तेज, मरुत् और व्योम
पंचभूतों की स्वरूप आप ही हैं । गंध, जल का रस,
तेज का रूप, वायु का स्पर्श और आकाश में शब्द आप ही हैं ।
आप इन पंचभूतों के गुण प्रपंच का कारण हैं, आप हम
पर प्रसन्न होम् ।

महेशे त्वं हेमवती कमला केशवेऽपि य ।
ब्रह्मणः प्रेयसी त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप शूलपाणि महादेवजी की प्रियतमा हैं । आप केशव की
प्रियतमा कमला और ब्रह्मा की प्रेयसी ब्रह्माणी हैं, आप हम पर
प्रसन्न होम् ।

चंडी दूर्गा कालिका य कौशिकी सिद्धिरूपिणी ।
योगिनी योगगम्या य प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप चंडी, दूर्गा, कालिका, कौशिकी,
सिद्धिरूपिणी, योगिनी हैं । आपको केवल योग से ही प्राप्त किया जाता है ।
आप हम पर प्रसन्न होम् ।

भाव्ये य बालिका त्वं हि यौवने युवतीति य ।
स्थविरे वृद्धरूपा य प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप बाल्यकाल में बालिका, यौवनकाल में युवती और
वृद्धावस्था में वृद्धारूप होती हैं । हे सुन्दरी! आप हम पर
प्रसन्न होम् ।

गुणमयी गुणातीता आधा विधा सनातनी ।
महत्तत्त्वादिसंयुक्ता प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे जननी! आप गुणमयी, गुणों से परे, आप आदि, आप सनातनी
और महत्तत्त्वादिसंयुक्त हैं । हे सुंदरी!
आप हम पर प्रसन्न होम् ।

तपस्विनी तपः सिद्धि स्वर्गसिद्धिस्तदर्शेषु ।
शिवमयी प्रकृतिस्त्वं तु प्रसन्ना भव सुंदरि ॥

हे माता! आप तपस्वियों की तपःसिद्धि स्वर्गार्थिगणों की
स्वर्गसिद्धि, आनंदस्वरूप और मूल प्रकृति हैं ।
हे सुंदरी! आप हम पर प्रसन्न होम् ।

त्वमाधिर्जगतां देवि त्वमेव स्थितिकाराणम् ।
त्वमन्ते निधनस्थानं स्वेच्छायासा त्वमेवहि ॥

हे जननी! आप जगत् की आदि, स्थिति का अकेला कारण हैं । देह के
अंत में ज्वगण आपके ही निकट जाते हैं । आप स्वेच्छाचारिणी हैं ।
आप हम पर प्रसन्न होम् ।

शराशराणां भूतानां बहिरन्तस्त्यमेव हि ।
व्याप्यव्याकृषेण त्वं भासि भक्तवत्सले ॥

हे भक्तवत्सले! आप शराशर ज्वगणों के बाहर और भीतर दोनों
स्थलों में विराजमान रहती हैं, आपको नमस्कार है ।

त्वन्मायया दृतज्ञाना नष्टात्मानो विचेतसः ।
गतागतं प्रपद्यन्ते पापपुण्यवशात्सदा ॥

हे माता! ज्वगण आपकी माया से ही अज्ञानी और चेतनारहित होकर
पुण्य के वश से बारम्बार इस संसार में आवागमन करते हैं ।

तावन्सत्यं जगद्भाति शुक्तिकारजतं यथा ।

यावन्न ज्ञायते ज्ञानं येतसा नान्वगामिनी ॥

जैसे सीपी में अज्ञानतावश यांटी का भ्रम हो जाता है और झिरे
उसके स्वरूप का ज्ञान होने पर वह भ्रम दूर हो जाता है, वैसे
ही जब तक ज्ञानमयी चित्त में आपका स्वरूप नहीं जाना जाता है,
तब तक ही यह जगत् सत्य भासित होता है, परन्तु आपके स्वरूप
का ज्ञान हो जाने से यह सारा संसार मिथ्या लगने लगता है ।

त्वज्ज्ञानात्तु सदा युक्तः पुत्रदारगृहादिषु ।

रमन्ते विषयान्सर्वानन्ते दुष्प्रदान् ध्रुवम् ॥

जो मनुष्य आपके ज्ञान से पृथक रहते हुए जगत् को ही सत्य
मानकर विषयों में लगे रहते हैं, निःसंदेह अंत में उनको
महादुष्प्रमिलता है ।

त्वदाज्ञया तु देवेशि गगने सूर्यमण्डलम् ।

चन्द्रश्च भ्रमते नित्यं प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवेशरी! आपकी आज्ञा से ही सूर्य और चंद्रमा आकाश मण्डल
में नियमित भ्रमण करते हैं । आप हम पर प्रसन्न होम् ।

ब्रह्मेशविष्णुजननी ब्रह्माप्या ब्रह्मसंश्रया ।

व्यक्ताव्यक्त च देवेशि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवेशरी! आप ब्रह्मा, विष्णु और भृगुश्वर की भी जननी हैं ।

आप ब्रह्माप्या और ब्रह्मासंश्रया हैं, आप ही प्रगट और गुप्त रूप
से विराजमान रहती हैं । हे देवी! आप हम पर प्रसन्न होम् ।

अथवा सर्वगा त्वं हि मायातीता भृगुश्वरि ।

शिवात्मा शाश्वता नित्या प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप अथवा, सर्वगामिनी, माया से परे,

शिवात्मा और नित्य हैं । हे देवी! आप हम पर प्रसन्न होम् ।

सर्वकायनियन्त्री च सर्वभूतेश्वरी ।

अनन्ता निष्काला त्वं हि प्रसन्ना भवसुन्दरि ॥

हे देवी! आप सबकी देह की रक्षक हैं । आप सम्पूर्णा जिवों की
ईश्वरी, अनन्त और अप्रमत्त हैं । आप हम पर प्रसन्न होम् ।

सर्वेश्वरी सर्ववधा अचिन्त्या परमात्मिका ।
भुक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे माता! सभी भक्तिपूर्वक आपकी वंदना करते हैं । आपकी कृपा से ही भुक्ति और मुक्ति प्राप्त होती है । हे सुंदरि! आप हम पर प्रसन्न होम् ।

ब्रह्माणी ब्रह्मलोके त्वं वैकुण्ठे सर्वमंगला ।
छंद्राणी अमरावत्यामम्बिका वरुणालये ॥

हे माता! आप ब्रह्मलोक में ब्रह्माणी, वैकुण्ठ में सर्वमंगला अमरावती में छंद्राणी और वरुणालय में अम्बिकास्वरूपिणी हैं । आपको नमस्कार है ।

यमालये कालरूपा कुबेरभवने शुभा ।
महानन्दाग्निकोणे च प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप यम के गृह में कालरूप, कुबेर के भवन में शुभदायिनी और अग्निकोण में महानन्दस्वरूपिणी हैं, हे

सुन्दरी! आप हम पर प्रसन्न होम् ।
नैऋत्यां रक्तदन्ता त्वं वायव्यां मृगवाहिनी ।
पाताले वैष्णवीरूपा प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप नैऋत्य में रक्तदन्ता, वायव्य कोण में मृगवाहिनी और पाताल में वैष्णवी रूप से विराजमान रहती हैं । हे सुंदरी! आप हम पर प्रसन्न होम् ।

सुरसा त्वं मणिद्वीपे ऐशान्यां शूलधारिणी ।
भद्रकाली च लंकायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप मणिद्वीप में सुरसा, ईशान कोण में शूलधारिणी और लंकापुरी में भद्रकाली रूप में स्थित रहती हैं । हे सुंदरी! आप हम पर प्रसन्न होम् ।

रामेश्वरी सेतुबन्धे सिंहाले देवमोहिनी ।
विमला त्वं च श्रीक्षेत्रे प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप सेतुबन्ध में रामेश्वरी, सिंहाद्वीप में देवमोहिनी

और पुत्रुषोत्तम में विमला नाम से स्थित रहती हैं । हे सुंदरी!
आप डम पर प्रसन्न होम् ।

कालिका त्वं कालिघाटे कामाख्या नीलपर्वत ।
विरजा ओद्देशे त्वं प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप कालीघाट पर कालिका, नीलपर्वत पर कामाख्या और
औद्देश में विरजरूप में विराजमान रहती हैं । हे सुंदरी!
आप डम पर प्रसन्न होम् ।

वाराणस्यामन्नपूर्णा अयोध्यायां मलेश्वरी ।
गयासुरी गयाधाम्नि प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप वाराणसी क्षेत्र में अन्नपूर्णा, अयोध्या नगरी में
मलेश्वरी और गयाधाम में गयासुरी रूप से विराजमान रहती हैं ।
हे सुंदरी! आप डम पर प्रसन्न होम् ।

भद्रकाली कुरुक्षेत्रे त्वंय कात्यायनी व्रजे ।
मालामाया द्वारकायां प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप कुरुक्षेत्र में भद्रकाली, वज्रधाम में कात्यायनी और
द्वारकापुरी में मालामाया रूप में विराजमान रहती हैं । हे देवी! आप
डम पर प्रसन्न होम् ।

क्षुधा त्वं सर्वज्जवानां वेला य सागरस्य छि ।
मलेश्वरी मथुरायां य प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप सम्पूर्ण ज्जवों में क्षुधाऋषिणी हैं, आप मथुरानगरी
में मलेश्वरी रूप में विराजमान रहती हैं । हे देवी! आप डम पर
प्रसन्न होम् ।

रामस्य जानकी त्वं य शिवस्य मनमोहिनी ।
दक्षस्य दृढिता यैव प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

हे देवी! आप रामचंद्र की जानकी और शिव को मोहने वाली दक्ष की
पुत्री हैं । हे देवी! आप डम पर प्रसन्न होम् ।

विष्णुभक्तिप्रदां त्वं य कंसासुरविनाशिनी ।
रावणनाशिनां यैव प्रसन्ना भव सुन्दरि ॥

હે માતા! આપ વિષ્ણુ કી ભક્તિ દેને વાલી, કંસ ઓર રાવણ કા નાશ કરને વાલી હૈમ્ । હે દેવી! આપ હમ પર પ્રસન્ન હોમ્ ।

લક્ષ્મીસ્તોત્રમિદં પુણ્યં યઃ પઠેદ્ભક્તિસંયુતઃ ।

સર્વજ્વરભયં નશ્યેત્સર્વવ્યાધિનિવારણમ્ ॥

જો પ્રાણી ભક્તિ સહિત સર્વવ્યાધિ કે નાશક ઇસ પવિત્ર લક્ષ્મી સ્તોત્ર કા પાઠ કરતા હૈ, ઉસે કિસી પ્રકાર કા જ્વર કા ભય નહીં રહતા હૈ ।

ઇદં સ્તોત્રં મહાપુણ્યમાપદ્ધુદ્ધારકારણમ્ ।

ત્રિસંધ્યમેકસન્ધ્યં વા યઃ પઠેત્સતતં નરઃ ॥

મુચ્યતે સર્વપાપેભ્યો તથા તુ સર્વસંકટાત્ ।

મુચ્યતે નાત્ર સન્દેહો ભુવિ સ્વર્ગે રસાતલે ॥

યહ લક્ષ્મી સ્તોત્ર પરમ પવિત્ર ઓર વિપત્તિ કા નાશક હૈ । જો પ્રાણી તીનોં સંધ્યાઓં મેં અથવા કેવલ એક બાર હી ઇસકા પાઠ કરતા હૈ, વહ સભી પાપોં સે છૂટ જાતા હૈ । સ્વર્ગ, મર્ત્ય, પાતાલ આદિ મેં કહીં ભી ઉસકો કિસી પ્રકાર કા સંકટ નહીં હોતા, ઇસમેં સંદેહ નહીં હૈ ।

સમસ્તં ચ તથા ચૈકં યઃ પઠેદ્ભક્તિત્પરઃ ।

સ સર્વદુષ્કરે તીર્ત્વા લભતે પરમાં ગતિમ્ ॥

જો પ્રાણી ભક્તિયુક્ત ચિત્ત સે સમ્પૂર્ણ સ્તોત્ર અથવા ઇસકા એક શ્લોક ભી પઠાઢ્ઠા હૈ, વહ સમ્પૂર્ણ પાપોં સે મુક્ત હોકર પરમગતિ કો પ્રાપ્ત હોતા હૈ ।

સુખદં મોક્ષદં સ્તોત્રં યઃ પઠેદ્ભક્તિસંયુક્તઃ ।

સ તુ કોટીતીર્થફલં પ્રાપ્નોતિ નાત્ર સંશયઃ ॥

જો મનુષ્ય ભક્તિયુક્ત હોકર સુખ ઓર મોક્ષ કે દેને વાલે ઇસ લક્ષ્મી સ્તોત્ર કા પાઠ કરતા હૈ, ઉસકો કરોડઃ િર્થો કા ફલ પ્રાપ્ત હોતા હૈ, ઇસમેં સંદેહ નહીં હૈ ।

એકા દેવી તુ કમલા યસ્મિંસ્તુષ્ટા ભવેત્સદા ।

તસ્થાઽસાધ્યં તુ દેવેશિ નાસ્તિકિંચિજ્જગત્ ત્રયે ॥

હે દેવેશ્વરી! જિસ પર આપકી કૃપા હો, ઉસકો તીનોં લોકોં મેં કુહ

भी असंभव नहीं है ।

पठनादपि स्तोत्रस्य किं न सिद्ध्यति भूतले ।

तस्मात्स्तोत्रवरं प्रोक्तं सत्यं हि पार्वति ॥

हे पार्वती! मैं सत्य कलता हूँ कि पृथ्वी पर औसा कुछ भी नहीं

है, जो इस स्तोत्र का पाठ करने से सुलभ न हो । यह स्तोत्र मैंने

तुम्हें सत्य कला है ।

॥ इति श्रीकमला स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

webdunia.com for additional texts with Hindi meanings.

Proofread by T N Ramakrishnan trnk64 at gmail.com



kamala stotram

pdf was typeset on November 22, 2022



Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

